न्यायालय जिला कलेक्टर,टोंक

(गौरव अग्रवाल,आई0ए0एस0द्वारा अध्यासित)

प्रकरण संख्या 45 / 2019
प्रविष्टि दिनांक 18—7—2019

श्रीमति कल्याणी धर्मपत्नि श्री राधाकिशन मीणा निवासी ग्राम कोटडी तहसील उनियारा जिला टोंक राज0

—अपीलाण्ट

बनाम

नायब तहसीलदार सोप जिला— टोक

—रेस्पोडेण्ट

अपील अन्तर्गत धारा 75 राजस्थान भू राजस्व अधिनियम 1956
विरूद्ध निर्णय नायब तहसीलदार सोप दिनांक 20—6—2019

उपस्थिति : (1) श्री दोलतराम चोधरी अभिभाषक अपीलान्ट
(2) श्री जुगनू शर्मा,राजकीय अभिभाषक रेस्पोडेण्ट

निर्णय दिनांक 24—3—2021

अपील का संक्षिप्त में सार इस प्रकार है कि अधीनस्थ न्यायालय नायब तहसीलदार सोप ने अपने निर्णय दिनांक 20—6—2019 के द्वारा अपीलान्ट को राजकीय भूमि खसरा नम्बर खसरा नम्बर 21 रकबा 0.02 है0 व खसरा नम्बर 249 रकबा 0.01 है0 वाके ग्राम कोटड़ी पर पश्चातवर्ती अतिक्रमण मानकर भूमि से बेदखल करने 3000 / रूपये की पेनल्टी कायम कर 90 दिवस के सिविल कारावास की सजा से दण्डित करने का आदेश दिया है। अपीलान्ट ने नायब तहसीलदार सोप के उक्त आदेश से व्यथित होकर आदेश को खिलाफ कानून बताते हुए निरस्त किये जाने का निवेदन किया है।

प्रकरण प्रस्तुत होने पर दर्ज रजिस्टर किया गया एंव तलबी रेस्पोडेण्ट जरिए सम्मन की जाकर अधीनस्थ न्यायालय की पत्रावली तलब की गई। प्रकरण में अभिभाषक अपीलान्ट एंव राजकीय अभिभाषक की बहस सुनी गई।

विद्वान अभिभाषक अपीलान्ट ने दोराने बहस अपील में अंकित तथ्यों को दोहराते हुए कथन किया कि अपीलान्ट को नायब तहसीलदार सोप द्वारा निर्णय से पूर्व नोटिस नहीं दिया है ओर नोटिस पर अपीलान्ट की विधिवत् व्यक्तिशः तामिल नही कराई गई है। अधीनस्थ न्यायालय ने अपीलाण्ट को सुने बिना एंव साक्ष्य सबूत पेश करने का अवसर प्रदान किये बिना एक पक्षीय निर्णय पारित करने में कानूनी गलती की है। अपीलाण्ट 80 वर्षीय वृद्व महिला है डायबिटीज की रोगी है उसकी हालत चलने फिरने की नहीं है। अपीलान्ट की उक्त भूमि पर गत 20 वर्ष से भी अधिक समय से मौके पर दुकानें बनी हुई है। दुकानों के किराये से ही अपना जीवन यापन कर रही है। अपीलान्ट के दुकानों में बिजली व नल कनेक्शन लगा हुआ [illegible] पानी की टंकी बनी हुई है। अपीलान्ट इस भूमि में बनी हुई दुकानों के किराये से अपना जीवन यापन कर रही है; अपीलान्ट के पास इसके अलावा [illegible] खसरा नम्बर काफी बड़ा है जिस में कई लोगों के मकानात / दुकानें बनी हुई है व आबादी बसी हुई है। पटवारी

Signature Not Verified
Digitally signed by Gaurav Agrawal
Date: 2021.04.06 11:17:01 IST
Reason: SelfAttested

Scanned by CamScanner

हल्का ने दुर्भावना पूर्वक अपीलान्ट के विरूद्ध कब्जे बावत गलत रूप से रिपोर्ट की है। अपीलान्ट को पटवारी हल्का से जिरह करने का अवसर नहीं दिया है। पटवारी हल्का की रिपोर्ट पर नायब तहसीलदार ने विश्वास करके जो निर्णय पारित किया है वह निरस्त योग्य है। अपीलान्ट के अभिभाषक का यह भी कथन है कि नायब तहसीलदार ने अपीलान्ट को एक ही निर्णय के द्वारा तीन सजाएँ कमशः बेदखल करने पेनल्टी कायम करने व सिविल कारावास की सजा का निर्णय पारित किया है कानूनन इस प्रकार एक ही निर्णय द्वारा सारी सजायें एक साथ दिये जाने का प्रावधान नहीं है। अतः अधीनस्थ न्यायालय का निर्णय दोषपूर्ण होने से निरस्तनीय है।

अपीलान्ट के अभिभाषक की बहस का जवाब देते हुए राजकीय अभिभाषक ने कथन किया कि अपीलाण्ट की विधिवत तामिल हुई है। विवादित भूमि पर अपीलान्ट दुकानों का पक्का निर्माण कर अतिकमण किया है। इस भूमि पर अपीलान्ट ने पहले भी अतिकमण किया था ओर अब पुनः अतिकमण किया है। अधीनस्थ न्यायालय द्वारा अपीलान्ट को विवादित भूमि से पूर्व में पत्रावली सं0 1120/18 निर्णय दिनांक 26-3-2019 से बेदखल किया गया था एंव पुनः पश्चातवर्ती अतिकमी होना माना गया है। अपीलान्ट सार्वजनिक उपयोग की राजकीय भूमि पर बार-बार अतिकमण करने की आदी है। अधीनस्थ न्यायालय का निर्णय सही एंव उचित है। अतः अपील अपीलान्ट खारिज की जावे।

विद्वान अभिभाषक अपीलान्ट एंव राजकीय अभिभाषक की बहस पर मनन किया एंव अधीनस्थ न्यायालय की अपीलाधीन पत्रावली का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया। अधीनस्थ न्यायालय की पत्रावली का अध्ययन करने से विदित होता है कि अपीलान्ट को अधीनस्थ न्यायालय द्वारा नोटिस देकर सुनवाई का अवसर दिया गया है। किन्तु तामील कुनिन्दा द्वारा नोटिस की विधिवत तामील नहीं करवाई गई है। नोटिस पर कमशःशीला एंव धनराज अंकित है जिससे यह ज्ञात नहीं होता है कि इनका अपीलान्ट से क्या सम्बन्ध है। अपीलान्ट अधीनस्थ न्यायालय में उपस्थित नहीं हुई है। नायब तहसीलदार सोप द्वारा अपीलान्ट को बिना सुनवाई का अवसर दिये निर्णय एकपक्षीय पारित किया गया है। ऐसी स्थिति में अधीनस्थ न्यायालय द्वारा पारित निर्णय मे हस्तक्षेप किया जाना उचित प्रतीत होता है।

फलतः अपील अपीलान्ट स्वीकार की जाकर अधीनस्थ न्यायालय का निर्णय दिनांक 20-6-2019 अपास्त किया जाता है एंव नायब तहसीलदार सोप को प्रकरण इस निर्देश के साथ प्रति प्रेषित (Remand) किया जाता है कि अपीलान्ट को सुनवाई का समुचित अवसर दिया जाकर समस्त रिकार्ड/कब्जे की जांच कर पुनः विधिवत निर्णय पारित करें। स्थगन प्रार्थना पत्र खारिज किया जाता है।

निर्णय आज दिनांक 24-3-2021 को खुले न्यायालय में सुनाया गया।

(गौरव अग्रवाल)
जिला कलेक्टर, टोंक

Signature Not Verified

Digitally signed by Gaurav Agrawal
Date: 2021.04.06 11:17:01 IST
Reason: SelfAttested

Scanned by CamScanner